Unit-2

बालविकास और किशोरावस्था (Child Development and Adolescence)

भूमिका :— बालक के विकास की प्रक्रिया गर्भावस्था से ही आरम्भ हो जाती है और जन्म के बाद शैशवावस्था, बाल्यावस्था, किशोरावस्था तथा प्रौढ़ावस्था तक क्रमशः चलती रहती है। विकास की इन अवस्थाओं में अलग-अलग विशेषताएँ एवं क्रियाकलाप होती हैं। शिक्षा के क्षेत्र में वृद्धि एवं विकास का बड़ा ही महत्व है। शिक्षा मनोविज्ञान बालक के विकास के विभिन्न पक्षों व विकास की विभिन्न अवस्थाओं में घटित होने वाली वृद्धि विकास की प्रक्रिया के स्वरूप तथा बालक-बालिकाओं में होने वाले शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, संवेगात्मक, नैतिक आदि परिवर्तनों का ज्ञान कराता है। जिससे विभिन्न आयु के बालकों के विकास के लिए प्रशिक्षण, अनुदेशन और निरन्तर अभ्यास का सुनियोजन किया जा सकता है। एक कुशल अध्यापक को बालक की अभिवृद्धि के साथ-साथ उसमें होने वाले विभिन्न प्रकार के विकास एवं उनकी विशेषताओं की सम्यक जानकारी होनी चाहिए। किशोरावस्था में बालकों में समस्या की अधिकता कल्पना की अधिकता और सामाजिक अस्थिरता होती है। इस समय किशोरों को शारीरिक एवं मानसिक समायोजन में अनेक कठिनाई का सामना करना पड़ता है।

Scanned with CamScanner

विकास का अर्थ एवं परिभाषाएँ (Meaning and definitions of Development) :—

विकास को प्रगतिशील परिवर्तनों के रूप में परिभाषित किया जाता है। व्यक्ति में विभिन्न गुणों, योग्यताओं का विकास उसकी शारीरिक परिपक्वता तथा अधिगम पर निर्भर करता है। वह अनुभवों के आधार पर नवीन क्रियाएँ सीखता है तथा पुरानी क्रियाओं में परिमार्जन करता है।

विकास के अन्तर्गत परिणात्मक की अपेक्षा गुणात्मक (Qualitative) परिवर्तनों पर अधिक बल दिया जाता है। इसके आधार पर कार्य-क्षमता की वृद्धि ही विकास है। यह परिपक्वता की ओर उन्मुख परिवर्तन है। मनोवैज्ञानिकों के अनुसार विकास पर वंशानुक्रम व वातावरण दोनों का प्रभाव पड़ता है। विकास अभिवृद्धि की अपेक्षा व्यापक सम्प्रत्यय है और विकास की कुछ निश्चित अवस्थाएँ भ्रूण, शिशु, बाल, किशोर, प्रौढ़ आदि होती हैं जिनकी अपनी-अपनी सामान्य विशेषताएँ होती हैं। विकास गर्भाधान से मृत्युपर्यन्त निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है। विकास की गति प्रत्येक अवस्था पर भिन्न-भिन्न है। इसका अर्थ एवं सम्प्रत्यय समझने में विद्वानों के कथन सहायक हो सकते हैं :—

Scanned with CamScanner

* शैफर एवं किप के अनुसार (Shaffer and Kipp, 2007) "विकास का आशय व्यक्ति में गर्भाधान से मृत्यु के बीच घटित होने वाली क्रमबद्ध निरन्तरताओं एवं परिवर्तनों से है।"

"Development refers to systematic continuities and changes in the individual that occur between Conception and death."

* हरलॉक के अनुसार (Hurlock, 1975) :- "विकास शब्द से तात्पर्य प्रगामी परिवर्तनों की ऐसी श्रृंखला से है जो परिपक्वता एवं अनुभव के कारण, क्रमबद्ध एवं पूर्वकथनीय प्रतिमान के रूप में उत्पन्न होती है।"

"The Term development means a Progressive Series of changes that occur in an orderly, predictable pattern as a result of maturation and experience"

* लबार्बा के अनुसार (Labarba, 1981) :- "विकास का आशय ऐसे परिपक्वात्मक परिवर्तनों से है जो प्राणी के जीवन में समय के साथ प्रदर्शित होते हैं।"

"Development refers to maturational Changes or changes that occur in organism over the course of time"

Sunday 04

MAY
JUNE

Scanned with CamScanner

* एण्डरसन (Enderson, 1974) के अनुसार :— "विकास का आशय किसी की ऊँचाई में कुछ इंचो की वृद्धि या उसकी योग्यता में वृद्धि मात्र से नहीं है, अपितु विकास अनेकानेक संरचनात्मक एवं प्रकार्यात्मक प्रक्रमों के समन्वय की एक जटिल प्रक्रिया है।"

"Development is not merely adding inches to one's height or ability. Instead development is a complex process of integrating many structures and functions."

* मुनरो के अनुसार — "विकास परिवर्तन श्रृंखला की वह अवस्था है जिसमें बच्चा भ्रूणावस्था से लेकर प्रौढ़ावस्था तक गुजरता है, विकास कहलाता है।"

"Development is the stage of the change chain in which the child passes from the embryonic stage to the puberty stage is called development"

उपर्युक्त परिभाषाओं से विकास का यह अर्थ स्पष्ट होता है कि विकास एक सार्वभौमिक प्रक्रिया है जो जन्म से लेकर जीवनपर्यन्त तक होते रहता है। विकास न केवल शारीरिक वृद्धि की ओर संकेत करता है बल्कि इसके अन्तर्गत वे सभी शारीरिक, मानसिक, सामाजिक और संवेगात्मक परिवर्तन सम्मिलित रहते हैं जो गर्भकाल से लेकर मृत्युपर्यन्त प्राणी में प्रकट होते रहते हैं।

Scanned with CamScanner

* विकास के सिद्धान्त (Principles of Development) :— मनुष्य के विकास की प्रक्रिया गर्भावस्था से ही आरम्भ हो जाती है। गर्भावस्था से आरम्भ हुआ विकास जीवन पर्यन्त निरन्तर चलता रहता है। मनुष्य के अन्दर काफ़ी-से परिवर्तन अवस्था-परिवर्तन के साथ होते रहते हैं। ये परिवर्तन कुछ निश्चित सिद्धान्तों के अनुरूप होते हैं। व्यक्ति के विकास के अनेक मनोवैज्ञानिक सिद्धान्त हैं। मुख्य सिद्धान्तों का उल्लेख निम्न-लिखित है :—

(i) निरन्तरता का सिद्धान्त।

(ii) व्यक्तिगतता का सिद्धान्त।

(iii) परिमार्जिता का सिद्धान्त।

(iv) विकास क्रम का सिद्धान्त।

(v) एकीकरण का सिद्धान्त।

(vi) परस्पर सम्बन्ध का सिद्धान्त।

(vii) मस्तकाधोमुखी का सिद्धान्त।

(viii) सामान्य से विशिष्ट-प्रतिक्रियाओं का सिद्धान्त।

(ix) केन्द्र से निकट-दूर का सिद्धान्त।

(x) वंशानुक्रम तथा वातावरण की अंतःक्रिया का सिद्धान्त।

Scanned with CamScanner